International Journal of Applied Research 2020; 6(4): 385-389

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(4): 385-389
www.allresearchjournal.com
Received: 13-02-2020
Accepted: 16-03-2020

डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, आर्य गर्ल्ज़ कालेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

Correspondence Author:
डॉ. संध्या गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर, आर्य गर्ल्ज़ कालेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा, भारत

साहित्यकार नागर और वियोगी की दृष्टि में सूरदास

डॉ. संध्या गौतम

प्रस्तावनाः
हिन्दी साहित्य के जाज्वल्यमान कवि सूरदास पर विभिन्न साहित्यकारों और समीक्षकों ने अपनी लेखनी चलाई, परन्तु अमृतलाल नागर ने 'खंजन नयन' उपन्यास तथा डॉ. लीलाधर वियोगी ने 'सीही का संत' महाकाव्य लिखकर एक इतिहास रच दिया।नागर द्वारा रचित उपन्यास खंजन नयन और वियोगी द्वारा रचित सीही का संत दोनों रचनाएं संत, भक्त, महाकवि सूरदास के जीवन चरित को लेकर लिखी गई है। हिन्दी साहित्य में दोनों रचनाएं अपनी मौलिकता में मील का पत्थर साबित हुई है। इतिहास को आधार बना कर लिखना अपने आप में एक जोखिम भरा कार्य होता है। इसमें साहित्यकार इतिहास के सत्य को बरकरार रखते हुए कल्पना द्वारा अपने समय की समस्याओं और नायक के परिवेश को इस प्रकार अंकित करता है, जो पाठक को सोचने, समझने और उस पर अमल करने के लिए विवश करता है। ऐसी ऐतिहासिक साहित्यिक रचनाएं सोने में सुहागे का काम करती है। महाकाव्य सीही का संत पर यह उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होती है। आज के युग में कन्या भ्रूण हत्या, कन्याओं का अभाव, समाज में नारी के प्रति संकीर्ण सोच आदि को देखते हुए कवि लीलाधर वियोगी ने इस समस्या को अपने इस महाकाव्य में बखूबी उठाया है। सूरज के पिता रामदास ने सूरज के जन्म पर अपनी तथा अपनी पत्नी के मन की अभिलाषा को अपने मित्रों के समक्ष अभिव्यक्त करते हुए कहा –

हम तो चाहते थे, पुत्री आएगी घर में,
कन्या की किलकारी गूँजेगी आंगन में।
उस लक्ष्मी का स्वागत होगा, पूजन होगा,
कन्या का जन्म सदा होता मंगलकारी।।

इस प्रसंग के अन्तर्गत कवि ने रामदास के माध्यम से नारी के प्रति अपने सकारात्मक विचारों को उद्घाटित किया है। कवि की मान्यता है कि पुत्री शक्ति स्वरूपा, घर की शोभा, उदण्डता पर अंकुश लगाने वाली तथा सबको मर्यादित करने वाली होती है। भारतीय संस्कृति से प्रभावित कवि ने कन्यादान के महत्व को भी प्रतिपादित किया, निम्न पंक्तियों में रामदास कहता है –

कन्यादान से मिलता है जो पुण्य पिता को,
शास्त्रों में वर्णित है जिसकी सुन्दर महिमा।
हम को भी वह सुख मिलेगा, पुण्य मिलेगा,
मंगलमय, पुत्री–विवाह होगा जब घर में।

यह प्रसंग वियोगी जी की भारतीय समाज तथा संस्कृति के प्रति सजग दृष्टि को प्रस्तुत करता है। डॉ. यश गुलाटी ने सीही के संत की प्रस्तावना में लिखा है कि नारी उत्पीडन, कन्या–भ्रूण हत्या के काल में नारी की महिमा के गायन और कन्या जन्म के प्रति स्वागत भाव इसके अभिनंदनीय पक्ष है। अमृतलाल नागर द्वारा रचित उपन्यास खंजन नयन में इस प्रकार का कोई प्रसंग नहीं आता।
प्रस्तुत महाकाव्य में कवि ने पतिव्रता नारी की महिमा का बखान किया है। सीही के संत सूरदास की सेवा में रत सुनयना एक विवाहित स्त्री है, जो अपनी मधुर मुस्कान और वाणी विदग्धता से सबका मन हर लेती है। उसके भाव जगत् में सूर बसे हैं, वह तन से मन से सेवा कर उन्हें पा लेना चाहती है। जब सूरदास को आभास होता है कि उनके भीतर भी सुनयना के प्रति मोह उपजा है, तो वे पाप–पंक रूपी वासना नदी में फिसल जाने के भय से अपने श्याम सखा को याद कर सुनयना के दुस्साहस को हतोत्साहित करने का संकल्प लेते हैं। वे अपने रोम–रोम से उसकी सेवा भावना का आभार व्यक्त करते है और उसकी कलुषिता मनोवृति के लिए कहते हैं–

कुछ दिन से, किन्तु मैं, यह अनुभव करता हूं,
बदले–बदले है भाव तुम्हारे, कृत्य तुम्हारे।
सेवा के अमृत–घट में विष घोल दिया है,
पावन गंगा जल को क्यों, कर रही अपावन?

सूरदास के समझाने पर सुनयना उन्हें रसभोग तथा गृहस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हुई कहती है कि ईश्वर ने नर–नारी का निर्माण इसीलिए किया है, ताकि दोनों मिलकर सृष्टि का विकास कर सके। सुनयना की अनर्गल बातें सुनकर सूर तिक्त वाणी में बोले कि तुम साधु–सन्तों की मर्यादा, उच्चादर्शों और भक्ति से अपरिचित हो इसीलिए विषय–वासनाओं का विष घोल रही हो। वे उसे प्रभु भक्ति तथा पति सेवा के लिए प्रेरित करते हुए पतिव्रता नारी की महिमा का बखान करते है–

पतिव्रता नारी होती गरिमा से मण्डित,
धर्म–परायण नारी का सौभाग्य अखण्डित।
ऋषि–मुनि, कविजन गाते पतिव्रता की महिमा,
सावित्री का यशोगान करते नर नारी।।

सुनयना के चले जाने पर सूर और श्याम सखा की बातचीत के माध्यम से कवि ने नारी की सकारात्मक और नकारात्मक शक्ति को व्याख्यायित किया है। यदि नारी ठान ले तो वह विश्व–विजय प्राप्त करने में सक्षम होती है, ऋषि–मुनि उसके समक्ष नतमस्तक होते हैं और वह अपने अंग–सौष्ठव और मनोहर हाव–भावों से वीतराग संतों का भी मन हर लेती है। सुनयना भी सूर के उपदेशों–आदेशों को सुनकर पतिव्रत धर्म का निर्वाह भी कर सकती है और विकृत मन के वशीभूत उसे लांछित भी कर सकती है। वियोगी जी ने नारी के मर्यादित जीवन के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए महाकाव्य के ग्याहरवें सर्ग में सुनयना के मुख से कहलवाया है –

स्वामी जी! कुवाक्य नहीं, जो दिया आपने
वह तो, मेरे जीवन का, गुरु–मंत्र बन गया।
पारस स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता
संत–कृपा से वही हुआ मेरे जीवन में।।

सुनयना उसी सूर स्वामी के प्रति नतमस्तक हो जाती है जिसे वह अपने काम वासना का साधन मानने लगी थी सूर स्वामी की प्रेरणा से ही वह पतन के गर्त में गिरने से बचती है और पति सेवा, जन सेवा और भक्ति को अपने जीवन का ध्येय बना लेती है। इस प्रकार कवि ने काल्पनिक सुनयना प्रसंग के द्वारा अपने महाकाव्य के महानायक सूरदास के प्रेरक, सुदृढ़ और उदात्त चरित्र को उद्घाटित किया है।

अमृतलाल नागर ने खंजन नयन के नारी के निर्मल और पवित्र रूप को कंतों मल्लाहिन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। कंतों से आकर्षित होकर ही सूर उसका अतीत जानना चाहता है। कंतो से मिल कर ही उसे अमीन तेगअली द्वारा दी जवान दासी सुनैना की याद आती है, जिसने सेवा के बहाने सूर स्वामी की जवानी को अपने वश में कर लिया था। बात यहाँ तक पहुंच गई कि एक रात सूर स्वामी ने उसे अपना कौमार्य सौंपने का निश्चय कर लिया था। रात को सुनैना जब सूरज की जठराग्नि को बुझाते हुए अपने स्पर्श से उसकी कामाग्नि भड़का रही थी तब एकाएक सूरज का श्याम मन बोल उठा अरे मूढ तेरी बाहर की तो फूटी ही हुई है, अब क्या भीतर की भी फोड़ेगा। ये नटनी आज तेरे सामने नाचती है, कल से तुझे नचा मारेगी। नागर जी का सूरदास सुनैना को समझाने की अपेक्षा वहां से पलायन कर जाता है। वह अनुभव करता है कि वह सुनैना को तो छोड़ आया है, परन्तु मदन–मार तो अभी भी उसे तड़पाती है, जो कंतो को पाकर पुनः जाग उठी है। कंतो को सुदृढ़ चरित्र, सच्चा प्रेम और सूर का श्याम मन सूरदास को भक्ति पथ से विचलित नहीं होने देते। काम आवेग में एकान्त पाते ही सूर कंतो से भोग करने की ज्योंही तैयार हुआ त्योंही सूर का मन श्याम का स्मरण करने लगता है। सूर का श्याम मन कंतों से कहता है जो सुख मैं पाना चाहता हूं वह भाग्य ने नहीं दिया और जो सुख मेरा भाग्य भोगना चाहता है वह मैं उसे नहीं दूंगा, समझी। इसी संकल्प से वह अपनी काम भावना का उन्नयन कर लेता है और भक्ति की ओर उन्मुख हो जाता है। उदात मना कंतों सूर को विचलित नहीं होने देती, वह उसे सांत्वना देते हुए कहती है अरे मन तो बड़े–बडे देवी देवातान है को डिग जाय; तुम तो बिचारे महात्मा हो। हम देखते हैं कि कैसे खंजन नयन के सूरदास को सहज विकार और वासनाएं बार–बार उद्वेलित करती हैं। सूर की दृष्टि में कंतो एक प्रेरणाप्रद व्यक्तित्व है वह कंतो के सम्बन्ध में कहता है यह स्त्री गंगाजल के समान निर्मल और सुब्रह्म कमल के समान सुन्दर है। खंजन नयन में नागर जी ने काम और श्याम के संघर्ष के द्वारा सूर की मानवीय दुर्बलता को उजागर किया है; जबकि सीही का संत में इस पक्ष की उपेक्षा की है। डॉ. यश गुलाटी ने इस संबंध में सीही का संत की प्रस्तावना में लिखा है कि "सीही का संत में सुनयना के प्रवेश का उद्देश्य सूर के मानसिक द्वंद्व का चित्रण नहीं, वरन् उनके चारित्रिक उत्कर्ष को मोटी कूची से रेखांकित करना है। बाह्य और आंतरिक साक्ष्य से सिद्ध होता है कि लौकिक सुख की अवधारणा से प्रभावित होकर सूर बाल्यकाल में ही बैरागी हो गए थे। सीही के संत की सुनयना के प्रति उपेक्षा इतिहास की कसौटी पर भी खरी उतरती है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्याम और काम के द्वंद्व के चित्रण से सम्भवतः कथा का प्रवाह अवरूद्ध हो जाता, अतः कवि ने कामाध्यात्म की चर्चा न कर कथा प्रवाह को, कथानक के विकास को प्राथमिकता दी है।" खंजन नयन उपन्यास में नागर जी ने नारी के प्रति समाज की संकीर्ण दृष्टि और बीमार मानसिकता को भी उद्धाटित किया है। यदि स्त्री–पुरुष स्वस्थ भाव से भी एकत्रित रहें तो भी समाज उनके संबंधों पर संदेह करता है। सूर और कंतो जहाँ भी जाते उन्हें समाज की इसी सच्चाई का सामना करना पडता, इसी से परेशान होकर एक दिन सूर कंतों को कहते हैं कि स्त्री–पुरुष साथ नहीं देखे कि दुनिया उनका मनमाना नाता जोड़ लेती है। लेखक लिखता है कि सूर और कंतों का संबंध जलकमलवत् था। उपन्यास में नागर जी ने श्रुतियों और लोक कथाओं को अपने कलात्मक शिल्प द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वो मौलिक जान पड़ती है जैसे सूरदास को हल में जोतना, कालू की कोठरी में नाग का निकलना, राजा सुबल का कंतों के साथ दुर्व्यवहार आदि। सीही का संत महाकाव्य में इस प्रकार का कोई प्रसंग नहीं मिलता जो जनश्रुति पर आधारित हो, उसमें कवि की मौलिक उदभावना या प्रामाणिकता पर आधारित प्रसंग दिए गए हैं। वास्तव में महाकाव्य में इस प्रकार के प्रसंगों के लिए कोई स्थान नहीं होता, जबकि उपन्यास में इनके लिए पर्याप्त अवकाश रहता है। कवि ने सूरदास के मौलिक पदों को महाकाव्य में रेखांकित किया है जो इसकी विश्वसनीयता को बढ़ाते हैं। उपन्यास में भी लेखक ने कुछ पद दिए हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास के लिए जिस गहन अध्ययन, मनन और भ्रमण की आवश्यकता होती है, उसका विस्तृत वर्णन नागर जी ने खंजन नयन उपन्यास की भूमिका में दिया है। उनका मानना है कि ऐतिहासिक उपन्यास को विशुद्ध इतिहास मान लेना भी ठीक नहीं। उपन्यास ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक–अनैतिक भले ही किसी भी विशेषण से युक्त हो वस्तुतः वह उपन्यास ही होता है, केवल उपन्यास। सीही का संत की भूमिका में वियोगी जी ने लिखा है खंजन नयन इतिहास नहीं उपन्यास है, इतिहास और कल्पना दोनों का समावेश। वियोगी जी ने लगभग एक वर्ष तक सूर सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन, अनुशीलन और सूर में संबंधित स्थानों का भ्रमण किया। उन्होंने महाकाव्य की भूमिका में स्वीकार किया है कि हमने भी खंजन

नयन से बहुत कुछ प्राप्त किया है किन्तु उपन्यास के कथाशिल्प और महाकाव्य के कथा शिल्प में अन्तर होता है, बहुत भिन्नता होती है। फिर भी, यह तो स्वीकार करना होगा कि सीही का संत न लिखा गया होता यदि नागर जी ने खंजन नयन उपन्यास न लिखा होता। यह उपन्यास मेरी काव्य–यात्रा में पगडंडी के समान माना जा सकता है। परन्तु यह भी स्पष्ट है कि सीही का संत एक काव्य कृति है, महाकाव्य है। यह इतिहास और कल्पना का मंजुल मिश्रण है। यह इतिहास या उपन्यास नहीं। यह महाकाव्य कवि ने मई 2006 को आरम्भ किया और 6 मई 2008 को सूरदास की 530वीं वर्षगाँठ पर पूर्ण किया। जिसमें लगभग दो वर्ष का समय लगा। नागर जी ने खंजन नयन उपन्यास का आरम्भ 30 नवम्बर 1979 को मथुरा में किया और 23 अक्तुबर 1980 को परासौली की सूर कुटी में पूरा किया। जिसमें लगभग एक वर्ष का समय लगा। डॉ. रामविलास शर्मा ने अमृतलाल नागर रचनावली की भूमिका में लिखा है किसी गद्य लेखक के लिए सूरदास और तुलसीदास जैसे कवियों का सारा काव्य पढ़ना, उनके मानस की थाह लेने का प्रयास करना, फिर उनके परिवेश के साथ उन्हें उपन्यास में चित्रित करना दुस्साध्य कर्म है। बीते युग के महापुरुषों को सजीव रूप में साधारण पाठकों के पास ले जाना मामूली सफलता नहीं है। इन तथ्यों के उल्लेख का उद्देश्य केवल यह इंगित करना है कि खंजन नयन और सीही का संत रचनाएं इन रचनाकारों के लिए केवल लेखकीय कर्म भर नहीं है, अपितु उनकी महाकवि सूरदास के प्रति श्रद्धा और निष्ठा को व्यक्त करते हैं।

महाकाव्य सीही का संत का प्रारम्भ मंगलाचरण से होता है, जिसमें कवि ने ईश्वर से धरती पर मानव के सुखद और आनंदमय जीवन की प्रार्थना की है। कवि की कामना है कि समस्त संसार में सौजन्य का सम्मान हो, सत्य की प्रतिष्ठा हो, सभी लोग निस्वार्थ मन से परमार्थ के मार्ग पर चले, शत्रुता का नाश हो, सद्भावना का वास हो, ईश्वर में सभी का विश्वास हो। मंगलाचरण के अंत में कवि ने ईश्वर और मां सरस्वती से काव्य–कौशल तथा महाकाव्य के संकल्प को पूर्ण करने का वरदान मांगा है। खंजन नयन का प्रारम्भ सिकंदर सुल्तान के राज में मथुरा में धर्म के नाम पर हो रही मारकाट से होता है। डॉ. लीलाधर वियोगी ने महाकाव्य के प्रारम्भ में सूर–सन्दर्भ, सूरदास के जीवन–काल में दिल्ली के शासकों और उनके शासन–काल की तालिका (ईसवी सन् के अनुसार) तथा सूरदास के समकालीन विभूतियों का प्रमाणिक परिचय दिया है, जो उनकी शोधात्मक दृष्टि का परिचायक है। हिन्दी में प्रायः रचनाओं के प्रारम्भ तालिका–परिचय का अभाव है। इस रचना से हिन्दी में तालिका–परिचय परम्परा का प्रारम्भ माना जा सकता है। नागर जी के उपन्यास में इस प्रकार की कोई तालिका नहीं मिलती।

महाकाव्य के प्रथम सर्ग में कवि ने सूरदास का जन्म स्थान बल्लभगढ़ के पास सीही गाँव को स्वीकार किया है और इसी आधार पर महाकाव्य का नामकरण किया, जबकि नागर जी ने सूरदास का जन्म गोवर्द्धन के निकट परासौली ग्राम में माना है। उपन्यास के प्रारम्भ मे ही सूरज अपना परिचय पं. सीताराम को देते हुए कहता है मेरा जन्म गौवर्द्धन के निकट परासौली गांव में हुआ था किन्तु चार वर्ष की आयु में गुरु ग्राम के पास सीही चला गया। हमारे दादा जो मूलतः परासौली के निवासी थे, यजमान के आग्रह में सीही गए थे। वियोगी जी ने सूरदास की मृत्यु परासौली में स्वीकार करते हुए लिखा है –

परासौली के लोगों ने, आँखों से देखा,
एक विराट्, पुरुष धरती से चला गया है।
बिठ्ठलनाथ जी देख रहे थे नीलाम्बर में,
एक ज्योति पुंज गगन में समा गया है।

उनके निधन पर मथुरा, वृंदावन, गोकुल, बरसाने, नंदगांव तथा आस–पास के क्षेत्रों से बहुत भक्त जन आए। खंजन नयन में लेखक ने अपने महानायक की मृत्यु का वर्णन ना कर उपन्यास के अन्त में सूरदास के गुरु वल्लभाचार्य जी की जल समाधि का चित्रण किया है। नागर जी लिखते हैं कि वल्लभाचार्य संवत् 1587 में संन्यास ग्रहण कर काशी चले गए और वहां उन्होंने आषाढ़ के शुक्ल पक्ष को जल समाधि लेने का निर्णय अचानक घोषित कर दिया। मध्याह्न बेला में वे हनुमान घाट की ओर चले, परिवार के लोग और शिष्यगण उनके साथ थे। सबको आशीर्वाद दिया। गंगाजल का आचमन किया, माथे से लगाया। श्री कृष्णः शरणं मम्, जल में एक डग, दो डग–डग घुटनों तक, कमर तक, छाती, अब कंधों तक, अब केवल मस्तक का पृष्ठ भाग ही किनारे खड़े लोगों को दिखाई दे रहा है। अब वह भी नहीं। मध्यधारा में एक अग्निपुंज जल से उठता लोगों ने देखा और वह आकाश में जाकर मिल गया।

उपन्यास के अंत में लेखक ने कृष्णदास अधिकारी और गंगाबाई के प्रेम प्रसंग और उनके कारण होने वाली राजनीति को चित्रित किया है। गंगा पक्की विठ्ठल की शत्रु थी, इसलिए कृष्णदास नहीं चाहते थे कि विटठ्लदास उस गद्दी पर बैठे। रसिक कृष्णदास ने अपने प्रयासों से वल्लभाचार्य के बड़े पुत्र स्व. गोपीनाथ के बेटे पुरुषोतम को गद्दी पर बिठाया। भगवदीय अंश गोस्वामी विट्ठलनाथ गोबर्द्धन से परासौली चले गए। उनके आचरण से प्रभावित सूरदास कहते है। – जब महापुरुषों के जीवन में बुरे ग्रहों को योग होता है तो वे दिन भी उनके लिए सुफलदायक ही हो जाते हैं। क्या आप यह अनुभव नहीं करते, दाऊ, कि श्री आचार्य जी के स्पर्श से जो भाव तरंगे हमें मिलती थी वही श्याम स्पर्श.....। सीही का संत में इस प्रकार के प्रसंग नहीं मिलते।

प्रकृति–चित्रण की दृष्टि से भी यह महाकाव्य अनूठा बन पड़ा है। कवि ने प्रकृति के आलम्बन, उद्दीपन, उपदेशिका आदि के रूप में अनेक अनुपम चित्र खींचे हैं। वह महानायक सूरदास को जन्म से लेकर मृत्यु तक जहाँ भी ले जाता है, वहां के परिवेश और प्रकृति का ऐसा सजीव वर्णन करता है कि पाठक अपने आप को उससे विलग नहीं कर पाता। महाकाव्य के प्रथम सर्ग में यमुना तट पर बसे सीही गांव की संस्कृति और प्रकृति का ऐसा मनमोहक चित्र अंकित किया है, जो सहज ही पाठक को अपनी और आकर्षित कर लेता है, यथा –

कल–कल करती, बहती कालिन्दी की धारा,
जो श्रवण–सुखद संगीत घोलती है मन में।
लहरों पर प्रतिबिंबित होती, शशि की किरणें,
मानो हीरक–कण ज्योतित हैं, उन लहरों में।।

कालिन्दी की कल–कल बहती संगीतमय धारा, उसकी लहरों में हीरक–कण सी प्रतिबिंबित होती शशि किरणों के आलंकारिक वर्णन के साथ–साथ कवि ने जलधारा में झुके तरुओं और उन पर बैठे क्रीड़ा कर रहे पक्षियों की सजीव झांकी प्रस्तुत की है–

जलधारा में तट के तरु झुक–झुक झाँक रहे,
दर्पण में मानो देख रहे हों, छवि अपनी।
नाना वर्णों के मन–मोहक सुन्दर पक्षी
तरु–शाखाओं पर नानाविध क्रीड़ा करते।।

प्रकृति के साथ–साथ कवि ने भारतीय ग्रामीण संस्कृति के अंतर्गत सीही के कृषि आधारित जीवन, यमुना स्नान, अतिथि देवो भव आदि का अंकन किया है। रामदास सूरज के नामकरण उत्सव पर आए अतिथियों को कहना है–

अतिथि–रूप में आप सभी है यहा पधारे,

अतिथि सदा पूजित होता है देव–रूप में,
धर्मशास्त्र बतलाते अभ्यागत की महिमा
सत्कार अतिथि का होता है, ईश्वर की पूजा।

खंजन नयन में लेखक ने कहीं पर भी इस प्रकार के उत्सवों और प्रकृति का चित्रण नहीं किया है। लेकिन उस समय के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश को चित्रित करने में दोनों रचनाकारों ने सफलता हासिल की है। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे, हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचार आदि का सजीव अंकन किया है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही नागर जी लिखते हैं – मथुरा मती जइयों। आज खून की मल्हारें गाई जा रही है वांपे।..... सुल्तान के राज में मारकाट के काजे कभी कोऊ बात होवे हैं भला। इसी प्रकार महाकाव्य का भोलानाथ सुल्तान सिकन्दर के राज में छाए आतंक में आतंकित मथुरा नगरी की व्यथा सूरदास स्वामी जी को बताया है कि किस प्रकार हिन्दुओं का जीना कठिन हो गया है –

विधर्मियों ने है भीषण आतंक फैलाया,
अपमानित करते हमको वे, समय–समय पर।
कर आक्रमण, कभी भी वे धन हर लेते हैं
बहू–बेटियों की मर्यादा, नहीं सुरक्षित।

उसके राज में अपहरण, शीलभंग, हिन्दुओं की निर्मम हत्याएं, आए दिन होती हैं। हिन्दुओं के यमुना स्नान, उत्सवों–त्यौहारों पर प्रतिबंध लगा है। संख्या में अधिक होते हुए भी हिन्दू एकता के अभाव, सत्ता के भय तथा स्वार्थ के कारण निरन्तर प्रताड़ित होते रहते हैं। दोनों ही रचनाओं में सूरदास अपने ज्योतिष ज्ञान, स्पर्श विद्या, संगीत, चमत्कार आदि से बनाए संबंधों से हिन्दू–मुसलमान सद्भाव स्थापित करते हैं, जो उनके उदात्त चिन्तन और व्यक्तित्व का परिचायक है। अनास्था के युग में वे आस्था का संचार करते हैं। यथा –

भुजबल से तो लगता है, प्रतिरोध असम्भव,
दोनों वर्गों में, सद्भावना जगानी होगी
है धर्म कभी भी नहीं सिखाता हत्या करना
हिन्दू का हो, धर्म चाहे हो, मुसलमान का।।

सीही का संत महाकाव्य में कवि ने सूरदास की शिक्षा को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रारम्भ में मां द्वारा स्पर्श और कृष्ण भक्ति, पशु–पक्षियों की ध्वनियों आदि से परिचित करवाना, पिता द्वारा की गई भागवत की कथा को ध्यान से सुनकर कंठस्थ करना और उसे पदों में गाना आदि सूरज की अदभुत स्मरण शक्ति का परिचय देते हैं। सूरज की अद्भुत स्मरण शक्ति और मेधा से प्रभावित रामदास सोचता है कि इस बालक को अन्धकूप से बाहर निकालने के लिए इसके भीतर भी ज्ञान का दीप जलाना होगा, विद्या की लाठी से स्वावलम्बन का पाठ पढ़ा, इसका जीवन सुगम बनाना होगा। कवि की मान्यता है कि चाहे कोई गूंगा–बहरा हो या विकलांग हो विद्या की नौका ही उसे पार लगाती है, यथा –

दुःखों को, दूर भगाएगी, शिक्षा की लाठी,
परावलम्बी, परजीवी ये नहीं बनेंगे।
स्वावलम्ब का मंत्र, सदा दिग्दर्शक बन कर,
आशा की किरण जगाएगा इनके जीवन में।।

रामदास ने सुयोग्य गुरु विद्यासागर से सूरज का यज्ञोपवीत करवा उनके सानिध्य में उसे छोड़ दिया; जहां उसने तीन वर्ष तक विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। सूरज के गायन पर मुग्ध हो पिता ने प्रारम्भिक संगीत की शिक्षा स्वयं दी, महान् संगीतज्ञ तानसेन और स्वामी हरिदास का गुणगान सुनाया और संगीतशास्त्र के नियमों का ज्ञान करवाया। वियोगी जी ने तीसरे सर्ग में संगीत के विविध रूपों और राग–रागिनियों को बड़े सहज भाव से परिभाषित किया है; जिसे पढ़कर पाठक भी संगीत का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेता है। यमुना तट पर स्वामी ब्रह्मानन्द के सानिन्ध्य में सुर, लय, ताल सब पर सूरज का अधिकार हो गया। सूरज की प्रतिभा से प्रभावित हो ब्रह्मनाद और रामदास ने सोचा उसकी काव्यशास्त्र की शिक्षा का प्रबन्ध तो करना होगा, अन्यथा उसकी कवि प्रतिभा जागेगी जैसेः–

काव्य–शास्त्र का ज्ञान इसे तो देना होगा,
कवि–शिक्षा उपयोगी होगी, काव्य सृजन में।।

साहित्य विशारद सोमेश्वर पंडित के संरक्षण में सूरज ने काव्यशास्त्र के मर्म को हृदयंगम किया। भाइयों की ईर्ष्या से तंग आकर उसने घर त्याग दिया और प्रभु कृपा से गुरु शूलपाणि से ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया। सीही का त्याग कर जब सूरज मथुरा के लिए कालू की नाव पर जाता है, तब वह नाव पर पं. सीताराम से स्पर्श विद्या ग्रहण करता है। तत्पश्चात् सूरदास गऊघाट पर वल्लभाचार्य से मिले और पुष्टि सम्प्रदाय में दीक्षित हुए, वे गुरु प्रभाव से बात्सल्य का कोना–कोना झांक आए। बिठ्ठलनाथ जी के प्रभाव से उन्होंने श्रृंगार के पद गाये। खंजन नयन उपन्यास में सूरदास की शिक्षा के संबंध में सभी गुरुओं और उनके द्वारा दी गई विधाओं का उल्लेख तो मिलता है, परन्तु सीही का संत जैसे क्रमबद्धता नहीं मिलती।

कृष्ण कोकिला मीरा, तुलसीदास, अकबर, तानसेन आदि सूरदास से मिले है। इसका उल्लेख दोनों रचनाकारों ने किया है। नागर जी ने उपन्यास में मीरा को जीवगोस्वामी से मिलते हुए दिखाया है, जबकि वियोगी जी ने मीरा के रूपगोस्वामी से मिलने का उल्लेख किया है। वास्तव में मीरा किससे मिली ये शोध का विषय है। तत्कालीन समाज में व्याप्त वेश्यावृति और देहव्यापार को भी दोनों रचनाकारों ने रेखांकित किया है। खंजन नयन में नागर जी लिखते हैं कि सूरदास जब धर्मनगरी काशी की गलियों से गुजरे, उन्हें लगा कि वे वेश्याओं की हाट में आ गए हैं। कोई कह रही थी अरी सुग्गो अब तेरा पाशुपताचार्य नहीं आवता है का।.... कैसे आवे विचारा, अपनी जूठी मदिरा पिलाय–पिलाय के भरी हाट में नचवाय दिया उसे। आधी शिखा काट के गिरौ रख ली है कि दस दिनार लाओ सुवरन की, छुड़ाया लै जाओ।.... अरे इन गालियन में बडे–बड़े संन्यासी, वेदज्ञ, बुद्ध, सरावगी क्रादी न जाने कौ–कौन आयके अपना मुख काला नहीं करावता है। महाकाव्य सीही का संत में वियोगी जी ने काशी में व्याप्त वेश्यावृति और देह व्यापार का वर्णन करते हुए उसके मूल कारणों पर भी प्रकाश डाला है। काशी की गलियों में भ्रमण करते हुए सूरदास ने अपने सेवक से पूछा यह श्रवण मधुर वाणी किसकी है, तब उसने बताया यहां के बड़े–बड़े धन–कुबेर सामन्त दोनों हाथों से उस पर अपना धन लुटा रहे हैं। इन वेश्याओं ने न जाने कितने घर बर्बाद कर दिए हैं। सेवक की बात सुनकर सूरदास एकान्त क्षणों में सोचते हैं कि नारी अपनी मर्यादा और सम्मान क्यों खो देती है –

सूरदास के अन्तस से, यह प्रतिध्वनि गूंजी
नर ही है, जो पतनोन्मुख करता नारी को।
असहाय, दुर्बल नारी की, कर प्रवंचना
कुम्भीपाक नरक में कामी नर धकेलता।

कवि ने यहां समाज की संकीर्ण सोच उद्घाटित किया है जो सदैव नारी को ही दोषी मानती आई है। सूरदास को पढ़ने वाले प्रत्येक पाठक के मन यह प्रश्न अवश्य आता है कि अंधे सूर ने पद कैसे लिखे होंगे। दोनों रचनाकारों ने आशुलिपिकों का वर्णन

किया है, जो सूरदास के पदों को लिपिबद्ध करते थे। वियोगी जी ने कुशल लिपिकर्ता रतिराम और मतिराम का उल्लेख किया है, जो काशी में सूर के पदों को लिपिबद्ध किया करते थे। यथा –

काशी में रहते, जो–जो भजन आपने गाये,
हमने उनको लिपि–बद्ध किया, अपनी इच्छा से
सृजन आपका करते है हम, भेट आप को।
स्वीकार कीजिए, यह विनम्र उपहार हमारा।।

नागर जी, का उपन्यास पढ़कर सूरदास के जीवन चरित के साथ–साथ लोक–जीवन गंध की अधिक आती है, क्योंकि उनके पात्र स्थान–स्थान पर अपनी लोक भाषा का प्रयोग करते हैं। सीही का संत महाकाव्य में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है। इसमें उपमा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग बड़े स्वाभाविक रूप से किया गया है। महाकाव्य की धारा प्रवाह शैली पाठक को सीही, काशी, अयोध्या आदि की प्रकृति का आनन्द देती हुई कहीं भी कथा को टूटने नहीं देती। एक सौ पांच वर्ष के महानायक के जीवन का लेखा–जोखा इतनी सूक्ष्म दृष्टि से प्रस्तुत करना कोई सरल कार्य नहीं है, जिसे विभिन्न विषयों के अनुभवी ज्ञाता वियोगी जी ने बडे सहज भाव से अपने महानायक के जीवन की एक–एक घटना को, उसके भावों को मोतियों की भांति एक माला में गूंथ दिया है। वे सूरदास के जीवन का कोना–कोना झांक आए हैं। आज के भौतिकवादी अनास्था के युग में आस्थावादी महानायक के जीवन चरित पर लिखा यह महाकाव्य आने वाली पीढ़ियों में आस्था, भारतीय संस्कृति के प्रति सकारात्मक सोच तथा लुप्त होती विधाओं पर शोध करने की प्रेरणा भरेगा।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अमृतलाल नागर ने खंजन नयन उपन्यास में जिस श्रद्धा और सामग्री को संजोया था, वियोगी जी ने उसे सीही का संत महाकाव्य में क्रमबद्ध ढंग से पूर्णता प्रदान करने का सफल प्रयास किया है।

सन्दर्भः

1. खंजन नयन : अमृतलाल नागर
2. सीही का संत : डॉ. लीलाधर वियोगी